International Journal of Applied Research 2024; 10(6): 127-129

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2024; 10(6): 127-129
www.allresearchjournal.com
Received: 15-04-2024
Accepted: 21-05-2024

डॉ. विकास कुमार
सहायक प्राध्यापक, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
डॉ. विकास कुमार
सहायक प्राध्यापक, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा, हरियाणा, भारत

ऑनलाइन मीडिया एवं भाषा संक्षेपण : सिरसा के युवाओ का एक अध्धयन

डॉ. विकास कुमार

सारांश
इंटरनेट के कारण आज भाषा में निरंतर परिवर्तन हो रहा है। अब समय तथा सुलभता के कारण भाषा के वाक्यों को संक्षिप्त कर दिया गया है तथा पूरे वाक्य की अपेक्षा इंटरनेट पर केवल लघु रूपों को उपयोग किया जा रहा है। इंटरनेट में चैटिंग की तथा ऑनलाइन की एक नई भाषा शैली को जन्म दिया है, जिसे अधिकतर इंटरनेट उपयोग करने वाले नेटीजन हैं। ऑनलाइन भाषा में संचार के एक नए आयाम को जन्म दिया है जहां नए शब्द तथा अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए, नए चित्र का सृजन किया जा रहा है। इस नई भाषा में या भाषा के संक्षिप्त रूप ने पारंपरिक भाषा को पूर्णतः बदल दिया है तथा आजकल के युवा चैटिंग करने के दौरान तथा अपनी प्रतिक्रियाएं दर्ज कराने के दौरान सोशल मीडिया पर इन शब्दों तथा इन लघु रूपों का उपयोग दिन प्रतिदिन कर रहे हैं। इस नई भाषा के निर्माण स्वरूप सभी इंटरनेट उपयोगकर्ता अपने शब्दकोश में प्रतिदिन नए शब्द शामिल कर रहे हैं। यह शब्द अन्य शब्दों के प्रथम वर्ण और अंतिम वर्ण को लेकर अधिकतर तैयार किए जाते हैं और इन शब्दों का प्रचलन इंटरनेट पर तेज गति से बढ़ रहा है। शोध में यह सिद्ध हुआ कि युवा वर्ग में इंटरनेट के कारण इस भाषा का प्रयोग एवं प्रचलन बढ़ा है तथा सभी उपयोगकर्ता अथवा सोशल मीडिया प्रयोग करने वाले उपभोक्ता इन शब्दों का अर्थ भली–भांति जानते हैं तथा नए शब्दों के सृजन में अपना योगदान देते हैं।

कूटशब्द: संक्षेपण, संक्षिप्त भाषा, परीवर्णी शब्द, लघुरूप, सोशल मीडिया।

प्रस्तावना
इंटरनेट की दुनिया में प्रतिदिन नए शब्द का आविष्कार हो रहा है। इंटरनेट पर चैट एवं संदेशों के लिए प्रतिदिन कुछ नए शब्द या वाक्यों का एक शब्द में संक्षेपण निरंतर बढ़ता जा रहा है। इंटरनेट की दुनिया व्यक्ति को एक सामाजिक मंच प्रदान करती है जहां वह अपने नए शब्दों का निर्माण करने के लिए पूर्ण रूप से स्वतंत्र है। नए शब्द के निर्माण के पश्चात केवल एक बार उस शब्द की व्याख्या की आवश्यकता पड़ती है, उसके पश्चात यह शब्द इंटरनेट उपभोक्ताओं के मध्य अपना स्थान कायम कर लेता है और यह नए शब्द दिन प्रतिदिन सूचना के साथ–साथ इंटरनेट उपभोक्ताओं के जीवन शैली का हिस्सा बन जाते हैं। आज के दौर में यह नए शब्द भाषा के विस्तार को अग्रसर कर रहे हैं। अब ऑनलाइन काम करते हुए, मनोरंजन करते हुए, सूचना को आगे प्रसारित करते हुए भाषा के पूरे वाक्यों का प्रयोग ना करके केवल कुछ संक्षेप शब्दों को प्रयोग किया जाता है तथा ज्यादातर नैटीजन के बीच यह शब्द सामान्य रूप से अपना लिए जाते हैं। संकेताक्षर और समादेश प्राचीन काल से ही लिखित भाषा परंपरा का हिस्सा रहे हैं। पुराने ऐतिहासिक ग्रंथ और हाथ से लिखी लिपियों में इन संकेतअक्षरों का प्रयोग मिलता है। इन संक्षिप्त विवरणओं में अनेक शब्द सम्मिलित हैं। इन संकेतों क्षणों का एकमात्र कार्य समय एवं स्थान को सुरक्षित करना हैं। इन संकेताक्षर की प्रयोग से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इनके प्रयोग का या अनुप्रयोग का मुख्य उद्देश्य दक्षता एवं सुविधा के लिए है। एक नया शब्द किसी पुराने शब्द के पहले और अंतिम भाग को काटकर बनाया जा सकता है। ऑनलाइन संचार में इन शब्दों की अवधारणा इस प्रकार से है कि इनको संरक्षित किया जाना आवश्यक है। एक लंबे अर्थपूर्ण वाक्य को लिखने से बेहतर है कि एक वाक्य को केवल एक शब्द में व्यवस्थित कर दिया जाए और यही एक शब्द ऑनलाइन भाषा का रूप ले चुके हैं। इंटरनेट की दुनिया में यह लघु शब्द संचार का पर्याय बन चुके हैं। जहां अधिकतर चैट एक दूसरे से अनजान लोगों से होती है। समाजिक माध्यमों पर विचार रखने से लेकर टिप्पणी करने तक यह लघु शब्द सर्वमान्य रूप में प्रयोग किए जाते हैं। अधिकतर व्यक्तिगत विचार सांझा करने में सांकेतिक भाषा तथा कोड भाषा का उपयोग अधिक किए जाते हैं। कुछ लघु शब्द अत्यंत व्यक्तिगत चैट के लिए उपयोग किए जाते हैं, जो सर्वमान्य रूप में उपस्थित नहीं होते। अर्थगत परिवर्तन अधिकतर लघु शब्द अपने भीतर एक से ज्यादा अर्थों को छुपाए रहते हैं। यह अर्थ संचार पर निर्भर करता है

कि वह उस शब्द के अर्थ को किस रूप में ग्रहण करता है। लघु शब्दों से भाषा के शब्दकोष में निरंतर परिवर्तन आ रहा है। यह आवश्यक नहीं है कि एक शब्द का अर्थ सभी व्यक्तियों के लिए एक समान हो, बहुत से शब्दों ने अपने पारंपरिक रूप से बदल कर स्वयं को नए अर्थों में स्थापित किया है, उदाहरण के लिए ऑनलाइन बहुत से ऐसे शब्द हैं, जिनका पारंपरिक अर्थ, वर्तमान अर्थ से भिन्न होता ळें जैसे इंटरनेट की दुनिया में होस्ट का मतलब मतलब जो यजमान को आदर सहित अपने घर पर बैठता हैं। वही इंटरनेट की दुनिया में होस्ट का अर्थ सूत्रधार से लिया जाता है। जो चैटरूम या किसी वेबसाइट को चलाता है। नए शब्दों का आविष्कार इंटरनेट की दुनिया में आम हो गया है। अब पूरा वाक्य लिखने की अपेक्षा अधिकतर स्मार्टफोन और इंटरनेट उपभोक्ता, इन्हें लघु संदेशों तथा इमोजी 'भावनाएं व्यक्त करने वाले चित्र' का उपयोग करता है, जिससे वह कम शब्दों में ज्यादा से ज्यादा बात कर सकता है।

मुख्य उद्देश्य

इंटरनेट उपयोगिता के कारण, युवाओं के संदेश लेखन में आए परिवर्तन को ज्ञात करना। युवाओं में इंटरनेट संक्षेपण भाषा के प्रयोग के स्तर को ज्ञात करना। संक्षिप्त भाषा एवं संचार सफलता प्रभाव को ज्ञात करना। नई शब्दकोष निर्माण में इंटरनेट की भूमिका को ज्ञात करना।

साहित्य समीक्षा

साहित्य समीक्षा को पूर्व में ज्ञात शोध निष्कर्षों की मान्यता को लेकर, नए शोध परिणामों की आधारशिला कहा जाता है।

किताडे 2000, ने शोध में यह पाया कि जापान में अंग्रेजी सीखने वाले लोग स्वयं शब्दों के सुधार करने में सक्रिय हैं तथा इंटरनेट की संक्षेपण भाषा या चैटिंग की भाषा जागरूकता बढ़ाने के साथ–साथ अर्थ पूर्ण संचार की सुविधा भी प्रदान करते हैं।

स्मिथ 2004, ने अपने शोध निष्कर्षों में ज्ञात किया कि ऑनलाइन चैटिंग की संदेश लेखन में विशेषता होती है जो भाषाई रूप में छात्रों का ध्यान बढ़ा सकती है। जिससे उनकी मौखिकरण, व्यवहार तथा शारीरिक भाषा और लिखित संदेश प्रक्रिया में बदलाव आता है। योंग जहयो 2006, ने मिशीगन विश्वविद्यालय में शोध के दौरान यह पाया कि इंटरनेट पर लिखित संदेश चैटिंग के दौरान उपयोगकर्ताओं को नया सीखने के लिए मंच प्रदान करता है। टेक्स्ट आधारित ऑनलाइन चैट आमने–सामने की संवाद से ज्यादा एकाग्रता प्रदान करता है तथा भाषा व्याकरण को सुधारने का अवसर प्रदान करता है।

ली रुहान 2012, ने व्यक्त किया कि वर्तमान में ऑनलाइन चैटिंग की भाषा नए आयाम स्थापित कर रही है। आम भाषा की अपेक्षा चैटिंग की संक्षिप्त भाषा का उपयोग इंटरनेट पर कहीं अधिक हो रहा है।

अनुसंधान उपागम

इस शोध के लिए गुणात्मक तथा मात्रात्मक विधि का चयन किया गया है क्योंकि गुण एक ऐसी विधा है जो प्रत्येक क्षण परिवर्तनशील रहता है। किसी वस्तु एवं व्यक्ति के गुण प्रधानता ही उसे श्रेष्ठ सिद्ध करती है। शोध से जुड़े युवाओं को अनेक अनुभव, विचारधारा एवं प्रभाव के तौर पर आंका गया है। मात्रात्मक विधि में शोध के लिए मापन योग्य चर जैसे उम्र तथा संख्या के तौर पर 100 युवाओं को चयनित करके उनके व्यवहार का अध्ययन किया गया हैं इसके लिए सांख्यिकी का प्रयोग आवश्यक है।

शोध नीति

आंकड़ों के प्राथमिक संकलन के तौर पर शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है। व्यवहारिक शोध के लिए यह उपयुक्त विधि है जहां व्यवहार तथा गुणात्मक आंकड़ों का संकलन किया जाना है। गूगल फार्म के तौर पर प्रश्नावली को उत्तरदाताओं के पास ई–मेल तथा व्हाट्सएप के माध्यम से संप्रेषित किया गया तथा प्रतिक्रिया प्राप्त की गई। इस शोध कार्य के लिए सिरसा के राजकीय महाविद्यालय तथा चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय के क्षेत्र का चुनाव निदर्शन पद्धति द्वारा किया गया है। जिनमें 50 छात्र तथा 50 छात्राएं, लॉटरी विधि से चयनित करके उनसे प्रतिक्रिया प्राप्त की गई है। नियंत्रित चर के तौर पर उत्तरदाताओं की आयु 18 वर्ष से 28 वर्ष के बीच चयनित किया गया है।

आंकड़ा प्रस्तुतीकरण

तालिका सँख्या 1: संक्षिप्त शब्द एवं संक्षेपण भाषा के उपयोग का कारण ?

उत्तरदाता	कम समय	कम परिश्रम	आसान है	कुल
छात्र	09	15	26	50
छात्राएं	11	13	26	50

युवा वर्ग इंटरनेट उपयोग के दौरान संक्षिप्त भाषा के उपयोग का कारण इन शब्दों का प्रयोग आसान होने का तर्क सामने आया। जिनमें कुल उत्तरदाताओं से 52 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह माना कि इन शब्दों का प्रयोग पूरा वाक्य लिखने की अपेक्षा आसान है इसलिए वे लघु शब्दों का उपयोग करते हैं। 52 प्रतिशत में 26 प्रतिशत छात्र एवं 26 प्रतिशत छात्राएं सम्मिलित हैं। वही 28 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि इन वाक्यों को लिखने में परिश्रम कम लगता है। 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि इन वाक्यों को लिखने में समय की खपत बेहद कम होती है तथा प्रतिक्रिया जल्दी दी जा सकती है इसलिए वे इन वाक्यों का उपयोग इंटरनेट उपयोग के दौरान करते हैं।

तालिका सँख्या 2: सोशल मीडिया या इंटरनेट उपयोग के दौरान आप किन शब्दों का उपयोग अधिक करते हैं ?

उत्तरदाता	जो प्रचलन में है	नए शब्दों का निर्माण	कुल
छात्र	32	18	50
छात्राएं	21	29	50

इंटरनेट तथा सोशल मीडिया प्रयोग के दौरान नए शब्द सृजन के उत्तर में अधिकतर छात्रों ने कहा कि वे नए शब्दों की रचना नहीं करते बल्कि जो शब्द प्रचलन में है उनका ही उपयोग करते हैं। वहीं छात्राओं ने माना कि वे अधिकतर अपनी गोपनीयता रखते हुए नए शब्दों का उपयोग करते हैं। कुल उत्तरदाताओं में से 53 प्रतिशत ने माना कि जो प्रचलन में शब्द हैं चैटिंग के दौरान उन्हें का उपयोग करते हैं जबकि 47 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह माना कि वह अपने चैटिंग अथवा संदेश लेखन में नए शब्दों का सृजन करके उन्हें प्रयोग करते हैं। इनमें अधिकतर लघु शब्द अधिक प्रयोग किए जाते हैं।

तालिका सँख्या 3: आपके विचार में इमोजी तथा संक्षिप्त भाषा के उपयोग से दूसरे व्यक्ति तक अपनी भावनाएं दर्शाई जा सकते हैं ?

उत्तरदाता	हाँ	न्हीं	कह नहीं सकते	कुल
छात्र	31	12	07	50
छात्राएं	27	10	13	50

इस प्रश्न के उत्तर में कुल 58 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि इमोजी तथा संक्षिप्त भाषा से दूसरे व्यक्ति तक अपनी भावनाएं

दर्शाई जा सकती हैं तथा इन चित्रों के माध्यम से भावनाओं को उल्लेखित किया जा सकता है। कुल 22 प्रतिशत का मानना है कि यह इमोजी और लघु शब्द से भावनाओं को उल्लेखित नहीं किया जा सकता 20 प्रतिशत उत्तर दाताओं ने इस विषय में कुछ नहीं कहा।

निष्कर्ष

निष्कर्ष किसी भी अनुसंधान द्वारा ज्ञात किए गए तथ्यों पर आधारित होते हैं जो व्यक्ति व्यवहार को समझने के लिए आवश्यक हैं। इस शोध के उपरांत यह निष्कर्ष निकलता है कि अधिकतर युवावर्ग इंटरनेट की संक्षिप्त परिभाषा तथा लघु शब्दों के प्रति जागरूक है। कुल 66 प्रतिशत उत्तरदाता आधे घंटे से 1 घंटे तक प्रतिदिन इंटरनेट उपयोग करते हैं। कुल 88 प्रतिशत युवावर्ग इंटरनेट पर लघु शब्दों तथा परीवर्णी शब्दों का उपयोग करते हैं। शोध निष्कर्ष में यह ज्ञात हुआ कि इमोजी तथा चित्रों के कारण संदेश अथवा टिप्पणी में प्रभाव उत्पन्न होता है। अधिकतर युवावर्ग इन लघु शब्दों तथा परीवर्णी शब्दों का उपयोग सोशल मीडिया पर दोस्तों से चैटिंग करते हुए प्रयोग करते हैं। ज्यादातर युवावर्ग यह स्वीकार करता है कि इमोजी तथा संकेतिक भाषा से वह अपनी भावनाएं दूसरे व्यक्ति तक लिखित संदेशों के माध्यम से पहुंचा सकते हैं तथा यह इमोजी और संकेत दूसरे व्यक्ति तक भावनाओं को समझने में सुगमता रखते हैं। शोध निष्कर्ष से यह ज्ञात हुआ कि वर्तमान समय में इंटरनेट के कारण भाषा में अनेक परिवर्तन आए हैं तथा पूरे वाक्य और भाषा लिखने की अपेक्षा युवा वर्ग लघु शब्दों संकेत एवं इमोजी का प्रयोग अधिक करना पसंद करता है इन लघु शब्दों ने पारंपरिक वाक्यों की स्थान ले लिया है तथा युवावर्ग के दैनिक जीवन में यह संक्षिप्त भाषा और अर्थपूर्ण लघु रूप ने अपना स्थान स्थापित कर लिया है। भावनाओं जिनमें गुस्सा, खुशी, हंसना, रोना, चिल्लाना है तथा मौसम और जानवरों जैसी अनेक चित्रों के उपयोग से लिखित संदेशों में भावनाएं उत्पन्न की जा सकती हैं। अधिकतर युवावर्ग जो इंटरनेट का उपयोग करता है वह इस भाषा को अथवा इस सामग्री को आसानी से पूरी तरह से समझ लेता है। युवावर्ग नई सृजनात्मक एवं भाषा शैली के प्रति सचेत हैं तथा नित्य नए शब्दकोश का निर्माण करते हैं इंटरनेट के कारण भाषा एवं व्याकरण में परिवर्तन आया है तथा वाक्यों की जगह लघु शब्द का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। जिससे एक नई शैली का निर्माण हुआ है।

संदर्भ

1. Dayal Manoj. Media shodh; c2003.
2. Vajpayee R, अनुसंधान विधिया
3. Warner C. Media selling; c2009,
4. Rowells D. Digital Branding; c2014,
5. statista.com/statistics
6. Wikipedia.org/wiki/Emozi